RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | Iss.11 | November 2021 | pp. 73-76
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

Online education during the Covid-19: Possibilities and Challenges
कोविड–19 के दौर में ऑनलाइन शिक्षा : संभावनाएं एवं चुनौतियां

*Lalan Kumar

Research Scholar, Department of Psychology, BNMU Madhepura, Bihar

Abstract

At present, the lockdown due to corona virus has had a huge impact on all areas of domestic life and business life. The education system has been transformed. Almost all educational institutions are closed. Online class is spreading at a very fast pace instead of offline class. Dex-bench, copy-book, blackboard, socializing with classmates has become like a dream. Internet, Smartphones, Earphones, Tablets, Laptops, Smartphones etc. have taken their place. Information and technology have become an integral part of life. On the one hand, where they are increasing the knowledge of technology, education is being taken by many students at the same time, while on the other hand network problem, poverty, lack of resources like smartphone, tablet laptop etc. is becoming a hindrance in them, and health There are many related problems. It is a challenging task for both teachers and students to adapt to these systems, but still online education is playing an important role in this difficult period of Corona period.

Keywords: *lockdown, learning, online education, internet, technology*

Abstract in Hindi Language

वर्तमान समय में कोरोना वायरस के कारण लॉकडॉउन से घरेलू जीवन व व्यावसायिक जीवन के सभी क्षेत्रों पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। शिक्षा व्यवस्था का तो कायापलट करके रख दिया है। सभी शिक्षण संस्थान लगभग बंद पड़े हैं। ऑफलाइन कक्षा की जगह ऑनलाइन कक्षा का प्रसार बहुत तेज गति से हो रहा है। डेक्स–बेंच कॉपी–किताब, श्यामपट्ट, सहपाठियों के साथ मेल–जोल एक सपना सा हो गया है। इनके जगह इंटरनेट, स्मार्टफोन, ईयरफोन, टैबलेट, लॅपटॉप, स्मार्अबोर्ड आदि ने ले लिया है। सूचना एवं तकनीक जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है। एक ओर जहाँ इनसे तकनीक की जानकारी में वृद्धि हो रही है, एक साथ बहुत से विद्यार्थियों के द्वारा शिक्षा ग्रहण किया जा रहा है वहीं दूसरी आरे नेटवर्क समस्या, गरीबी, स्मार्टफोन, टैबलेट लैपटॉप आदि संसाधनों का अभाव इनमें बाधा बन रहा है, तथा स्वास्थ संबंधी कई समस्याएँ देखने को मिल रहा है। शिक्षकों एवं छात्रों दोनों के लिए इन व्यवस्था में ढलना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है लेकिन फिर भी कोरोना काल के इस कठिन दौर में ऑनलाइन शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

Keywords: लॉकडॉउन, पठन–पाठन, ऑनलाइन शिक्षा, इंटरनेट, तकनीक

Article Publication

Published Online: 25-Nov-2021

***Author's Correspondence**

Lalan Kumar

Research Scholar, Department of Psychology, BNMU Madhepura, Bihar

llnkmr245@gmail.com

10.31305/rrijm.2021.v06.i11.012

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

Introduction (विषय परिचय) :–

''कोविड–19'' का मतलब कोरोना वायरस डिजीज 2019 से है। इस वायरस का सर्वप्रथम मामले की पहचान दिसम्बर 2019 में चीन के हुबोई प्रांत के वुहान शहर में हुई। 2019–20 के कोरोना वायरस के प्रकोप को 30 जनवरी 2020 को WHO ने अंतरास्ट्रीय चिंता की सार्वजनिक स्वास्थ अपात स्थिति तथा 11 मार्च 2020 को महामारी घोषित कर दिया। इस वायरस के प्रसार का मूख्य कारण संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आना या खांसने, छींकने, से उत्पन्न छोटी बूंदों के संपर्क में आने से होता है। इसलिए इसके प्रसार को रोकने के लिए विश्व के लगभग सभी देशों के द्वारा लॉकडॉउन किया गया।

कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए किया गया लॉकडॉउन ने वैसे तो सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया लेकिन अन्य क्षेत्र तथा व्यावसायिक जीवन के साथ–साथ शिक्षा व्यवस्था का कायापलट करके रख दिया। ऑफलाइन अर्थात कक्षाकक्ष में जाकर पढ़ने की जगह आज ऑनलाइन शिक्षा का प्रसार बहुत तेज गति से हो रहा है। इन दिनों घर ही स्कूल का रूप ले लिया है। सहपाठियों से मेल–जोल तथा कक्षा–कक्ष की पढ़ाई एक सपना सा बन चुका है।

ऑनलाइन क्लास का तात्पर्य है कि ब्लैकबोर्ड और चॉक की जगह या वहइट बोर्ड और मार्कर की जगह Interactive Flat Panel एल ई डी/ एल सी डी स्क्रीन, स्मार्टबोर्ड, डिजिटल मार्कर, की सहायता से तथा कक्षा–कक्ष आदि स्कूल/ कालेज/यूनिवर्सिटी में नही जाकर अपने घर से ही इंटनेट, स्मार्टफोन, टेबलेट, लैपटॉप आदि की सहायता से किसी एप के माध्यम से जुड़कर क्लास करना है। यूँ कहा जाय तो सूचना एवं तकनीक के माध्यम से अध्ययन–अध्यापन का कार्य संपादित करना ऑनलाइन क्लास कहलाता है।

सामान्यतया फरवरी से जुलाई का समय प्रयोगात्मक परीक्षा लिखित परीक्षा, मूल्यांकन, प्रतियोगी परीक्षा, परीक्षा परिणाम, अगली कक्षाओं में प्रवेश और नई ऊर्जा के संचार के साथ विद्यार्थियों के जीवन की दिशा निर्धारण का समय होता है। इस वैश्विक महामारी के कारण ये सब लगभग स्थिर हो गया है। इस समस्या का समाधान के लिए स्कूलों/प्राइवेट संस्थानों आदि के द्वारा ऑनलाइन क्लास के माध्यम से पठन–पाठन का कार्य शुरू किया गया।

ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक उत्कृष्ट व्यावसायी कई प्रकार के नवाचार का प्रयोग कर रहे हैं। विभिन्न ऐप के माध्यम से शिक्षक एवं छात्रों के द्वारा पठन–पाठन का कार्य किया जा रहा है। ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सामान्यतः तीन प्रकार के ऐप का प्रयोग किया जा रहा है– सोशल मीडिया ऐप, मैसेंजर ऐप तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिग ऐप। सोशल मीडिया ऐप में सार्वधिक यूट्यूब व फसेबुक का प्रयोग किया जा रहा है। मैसेंजर ऐप में सामान्यतया व्हाट्सऐप, टेलीग्राम, स्काइपी व इमेल का प्रयोग किया जा रहा है। वीडियो कॉन्फ्रेसिंग ऐप जिनमें जूम, गूगल मीट, वेबेक्स, गोटुवेबिनार, जोहो, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स आदि का प्रयोग किया जाता है। वर्तमान समय में ऑनलाइन कक्षा के लिए सबसे अधिक प्रयोग वीडियो कॉन्फ्रेसिंग ऐप का ही किया जाता है। छात्र अपने स्मार्टफोन, टैबलेट या लैपटॉप में इन ऐप को इन्स्टॉल कर लागइन करते हैं, लॉग–इन करके डिजिटल क्लासरूप से जुड़ जाते है तथा छात्र शिक्षक के बीच सीधा संवाद प्रारंम्भ हो जाता है। इनके अलावा विभिन्न सोशल मीडिया ऐप पर लाइव क्लास या किसी लेक्चर को असाइनमेंट, टेस्ट पेपर, आडियो या वीडियो फार्मेटमें रिकार्ड किया जाता है और उसे संस्थान या पब्लिक प्लेटफॉर्म पर अपलोड यिका जाता है। तथा विभिन्न मैसेंजिंग प्लेटफॉमों के माध्यम से भेजा जाता है। भारत सरकार के द्वारा भी ई–लर्निंग को प्रोत्साहन देने के लिए 'दीक्षा' 'स्वयं', 'स्व्यंप्रभा, ई–पाठशाला' आदि चैनलों व कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।

वर्तमान समय में वैसे तो देश के कई स्कूलों, कॉलेजों व प्राइवेट शिक्षण संस्थानों के द्वारा ऑनलाइन क्लास करवाया जा रहा है लेकिन बहुत से स्कूल, कालेज ऐसे भी है जो सुविधा सम्पन्न नहीं है ऐसे में ऑनलाइन पढ़ाई सुचाय रूप से संचालित कराने में असमर्थ है। ऑनलाइन क्लास की सबसे बड़ी समस्या नेटवर्क की समस्या है। वैश्विक शिक्षा नेटवर्क क्वाक्वारेली सिमंड्स (Q.S.) की रिपोर्ट के अनुसार भारत में इंटरनेट का बुनियादी ढांचा अभी ऑनलाइन लर्निंग को सक्षम बनाने के लिए तैयार नहीं है। इंटरनेट और मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (IMAI) की रिपोर्ट के अनुसार वित्तीय वर्ष 2019–20 के अंत तक 45.1 करोड़ मासिक सक्रिय उपयोगकर्ताओं के साथ भारत इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के मामले में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है लेकिन फिरभी यहाँ मात्र 36% लोगों के पास ही इंटरनेट तक पहुँच है। नेशनल सैंपल सर्वे की 2017–18 की रिपोर्ट के अनुसार, 5 और 24 वर्ष की उम्र के सदस्यों वाली सभी घरों में केबल 8% के पास ही कम्प्यूटर और इंटरनेट कनेक्शन है। 2018 के रिपोर्ट में नीति आयोग ने भी माना है कि 55000 गाँवों में आज भी मोबाइल नेटवर्क कवरेज नहीं है।

शहर के लोग जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक है जो सक्षम तथा शिक्षित वर्ग से आते हैं वो तो ऑनलाइन क्लास के लिए आवस्यक उपकरण ले सकता है लेकिन भारत में ग्रामीण इलाके का बहुत बड़ा भाग जहाँ अच्छी इंटरनेट कवरेज का अभाव है साथ–ही–साथ लोग निर्धन व अशिक्षित है, जहाँ स्मार्टफोन, टैबलेट, लैपटॉप आदि का अभाव पाया जाता है वहाँ के छात्रों के लिए यह संसाधन जुटाना बहुत बड़ी चुनौती हो जाती है। लगभग यही हाल संस्थानों का है। कम बजट वाले संस्थान जिनके पास शिक्षक तो बेहतर है लेकिन ऑफलाइन क्लास को ऑनलाइन बनाने हेतु आवश्यक संसाधनों का अभाव है जिनके पास वह ऑनलाइन कक्षा को सुचारू रूप से संचालित करा पाने में असमर्थ है। ऑनलाइन क्लास के लिए कैमरा, माइक, स्टैंड, लाइटिंग, इनवाइटर, लैपटॉप, इडिटिंग सॉफ्टवेयर, तकनीकि ट्रैंड स्टाप, इनटेरेक्टीव फ्लैट पैनल, स्टूडियो आदि की व्यवस्था

करना पड़ता है। जो एक साधारण संस्थानों के लिए बहुत खर्चीला हो जाता है। जिसके कारण अच्छे शिक्षक के बावजूद वह छात्रों के साथ बेहतर इन्ट्रक्शन नहीं कर पाते हैं।

एक ओर जहाँ स्मार्ट डिवाइस का अभाव इंटरनेट का अभाव के कारण समस्याएँ उत्पन्न होता है। वहीं दूसरी ओर बार–बार बिजली कट जाना व बार–बार वाई–फाई बंद हो जाने के कारण भी पढ़ाई बाधित होती है। इतना ही नहीं घरेलू माहौल विद्यार्थी तथा शिक्षकों दोनों के लिए भटकाव पैदा करता है। मोबाइल या कम्प्यूटर स्क्रीन के सामने ज्यादा समय बिताने पर शारीरिक और मानिसक आघात देखने को मिल रही है। ऑनलाइन पढ़ाई से बच्चों में स्वास्थ सम्बन्धी समस्याएँ भी देखने को मिल रही है। आँखों में समस्याएं तो आम बात हो गई है। अधिकांश समय मोबाइल और लैपटॉप से चिपके रहने के कारण छात्रों की रचनात्मक क्षमता भी प्रभावित हो रही है। इनका सीधा असर उनके मानसिक विकास पर पड़ रहा है।

ऑनलाइन पढ़ाई के कई फायदे भी है। तकनीक के मद्द से पढ़ाई करने से पढ़ाई के नवीन तरीकों को बढ़ावा मिलता है। जहाँ ऑफलाइन कक्षा में एक समय में एक निश्चित छात्रों को ही बैठा सकते हैं वहीं ऑनलाइन पढ़ाई से एक समय में बहुत से विद्यार्थीयों को शिक्षा का लाभ मिल सकता हैं साथ–ही–साथ नियमित कैम्पस के अलावा यह कम खर्चीला भी है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सकल नामांकन अनुपात (GER) को बढ़ाने में ऑनलाइन शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा में भारत का सकल नामांकन अनुपात (GER - Gross Enrollment Ratio) यानि 18–23 आयु समूह में कुल पात्र आबादी में छात्रों का प्रतिशत 26% है जबकि अमेरिका में यह 85% से ज्यादा है। ऑनलाइन शिक्षा के प्रसार से शिक्षक–छात्र अनुपात को भी बहुत पैमाने पर बदला जा सकता है क्योंकि इनमें एक ही शिक्षक एक समय में बहुत से लोगों को शिक्षा दे सकते हैं। गणिपाल एजुकेशन ऐंड मेडिकल ग्रुप के सीईओ एस. वैदीश्वरन कहते हैं कि – ''यदि हमें 35% GER तक भी पहुचना हो तो अगले पांच साल में हमें कॉलेज में 2.5 करोड़ छात्र बढ़ाने होंगे। ईंट और गारे के विश्वविद्यालय इतने ज्यादा छात्रों की जरूरत कतई पूरी नहीं कर सकते। ऐसा करने के लिए हमें हर चौथे दिन एक नया विश्वविद्यालय और हद दूसरे दिन एक नया कॉलेज खोलना होगा।'' इसलिए हमें ऑनलाइन शिक्षा के विस्तार पर ध्यान देना जरूरी है।

Conclusion (निष्कर्ष) :–

उपर्युक्त विवेचना के आधार परि निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में ऑनलाइन कक्षा को संचालित करने में बहुत समस्याएँ है। ऑनलाइन पद्धति से शिक्षा एक सीमा तक ही प्राप्त होगा तथा पुस्तकीय ज्ञान तो पूरा होगा पर सैद्धांतिक ज्ञान से अपेक्षाकृत वंचित रहेगा। इंटरनेट और वर्चुअल वर्ल्ड के वर्तमान दौर में पहले ही समाज से कटते जा रहे है। फिर भी, इतना सब होते हुए भी कोरोना संकट के दौरान वैकल्पिक तौर पर ऑनलाइन शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

Recommendation (सुझाव) :–

एक ओर जहाँ ऑनलाइन पढ़ाई में विभिन्न प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही है वहीं दूसरी ओर 21वीं शदी में ऑनलाइन शिक्षा समाज की आवश्यकता भी बनता जा रहा है। ऐसे में मेरा सुझाव यह होगा कि नीति निर्धरकों को एक मिश्रित व्यवस्था चलाना चाहिए, जिनमें ऑफलाइन क्लास के माध्यम से नैतिक, सामाजिक व व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ावा मिले तथा ऑनलाइन क्लास के माध्यम से तकनीकी ज्ञान को बढ़ावा मिले। साथ–ही–साथ सरकार को चाहिए इंटरनेट कनेक्टीविटी को बेहतर बनाने के लिए ऑप्टिकल फाइबर के माध्यम से ग्राम पंचायतों को ब्रॉडबैंड प्रदान करना चाहिए तथा सस्ती इंटरनेट के साथ–साथ नियमित बिजली की व्यवस्था हेतु सोलर पैनल का विकास करना चाहिए।

Reference

DNS Kumar (29 April 2020). Impact of COVID-19 on Higher Education. Retrieved on May 25, 2020 from https://www.highereducationdigest.com/impact-ofcovid-19-on-higher-education/

DNS Kumar (29 April 2020). Impact of COVID-19 on Higher Education. Retrieved on May 25, 2020 from https://www.highereducationdigest.com/impact-ofcovid-19-on-higher-education/

Wikipedia, Education in India Retrieved on May 24, 2020.

India Today monthly magazine (June, 2020)

Yojana monthly magazine (June, 2020)

https//www.iamai.in

https//www.mospi.gov.in

https//www.mhrd.gov.in

https//www.education.gov.in

https//www.niti.gov.in

https//www.who.int

https//www.covid19india.org